ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 346-347

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

गया जिला के सेनानी ग्राम की सुजाता

मनोज कुमार
शोधार्थी इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: - devendu.alok@gmail.com

सारांश : *बुद्धकालीन सेनानी ग्राम उरूवेला (बोधगया) के पूरब निरंजना नदी के पूर्वी तट पर बसा हुआ बकरौर एक गाँव है। इसी गाँव का सेनानी नामक सेठ का निवास स्थान था। पालि परम्परा (बौद्धों की प्राचीन शाखा स्थविरवाद) के अनुसार सेठ सेनानी के निवास स्थान को सेनानी ग्राम कहा गया है। पांचवी शताब्दी के पालि ग्रन्थों के अट्ठकथाकार, आचार्य बुद्धघोष के अनुसार दो व्याख्याएँ प्रस्तुत की गई हैं। इनके अनुसार प्रथम कल्प में सेनानी ग्राम एक सैनिक छावनी (स्थान) के रूप में स्थापित था –– "पठमकपिकानं सेनायं निविट्ठोकासे पतिट्ठितगामे।" दूसरी व्याख्या के अनुसार सुजाता के पिता सेनानी गाँव के निवासी होने के कारण यह सेनानी ग्राम कहलाता था – "सुजाताय वा पितु सेनानीनाम निगमो।"1 पालि त्रिपिटक का प्रथम पिटक सुत्त पिटक के पांच निकायो में से द्वितीय मज्झिम निकाय में सेना की छावनी ग्राम कहा गया है।2*

कुंजीभूत शब्द– उरूवेला, निरंजना, बकरौर, पालि परम्परा, स्थ विरवाद, सेनानी ग्राम, व्याख्याएँ, सुत्त पिटक, छावनी।

पालि परम्परा के अनुसार सेठ सेनानी के एक मात्र पुत्री सुजाता का उल्लेख है, जिसका विवाह वाराणसी के एक सेठ से हुआ था। जब कि महायानी परम्परा के संस्कृत ग्रन्थ–बृद्ध विजय काव्यम[3] के अनुसार सेनानी ग्राम में रहने वाले नंदिक की सुजाता आदि दस पुत्रियाँ थी, जिनमें सुजाता सबसे छोटी थी, जो कुमार सिद्धार्थ की भक्त बन गई थी। सुजाता की प्रथम बहन बला, दूसरी बलगुप्ता, तीसरी सप्रिया, चौथी विजय सेना, पांचवी अतिमुक्तांवुजा, छठी सुन्दरी, सातवीं कुभंकारी, आठवीं उरूविल्वका, नवमी जटिलिका तथा सबसे छोटी सुजाता थी। सेनानी ग्राम का मुखिया नदिंक की पुत्रियाँ बोधिसत्व सिद्धार्थ के छः वर्षों के तपस्या के समय उनकी पूजा करने के लिए जाया करती थी। लेकिन नदिंक की सबसे छोटी पुत्री सुजाता बोधिसत्व सिद्धार्थ की उत्तम कल्याण की कामना करते रहती थी। वह चाहती थी कि बोधिसत्व मेरे द्वारा अर्पित खीर को खाकर सम्यक सम्बोधि प्राप्त करें।

पालि त्रिपिटक अन्तर्गत सुत्तपिटक के पांचवाँ निकाय खुद्दक निकाय के ग्रन्थ जातक[4] के अनुसार "उरूवेला प्रदेश के सेनानी नामक कस्वे में सेनानी कुटुम्बी के घर में उत्पन्न सुजाता तरूणी होने पर गाँव के एक बरगद वृक्ष के देवता से मिन्नत मान रखी थी कि "यदि समान जाति के कुल घर में जाकर, पहले ही गर्भ में पुत्र लाभी करूँगी, तो प्रति वर्ष वैशाख पूर्णियाँ के दिन एक लाख के खर्च से तेरी पूजा करूँगी। उसकी यह प्रार्थना बोधिसत्व सिद्धार्थ के सम्यक सम्बोधि प्राप्ति के बीस वर्ष पूर्व ही उस बरगद वृक्ष की देवता ने उसकी मन्नत को पूरी कर दी थी। फलतः वह इक्कीसवें वर्ष अपनी ससुराल सारनाथ (वाराणसी) से अपने पिता के गाँव (सेनानी ग्राम) आकर वलि कर्म करने के लिए (538 ई0 पू0) आ गयी थी।

सुजाता के पिता की हजारों गायें वर्तमान जेठियन (यष्टिवन) के जंगलों में चरने के लिए जाया करती थी। वैशाख पूर्णियाँ के दिन वलि कर्म करने की इच्छा से उसने पहले एक हजार गायों को यष्टि–मधु (जेठी मधु) के वन में चरवाकर उसका दुध दूसरी पांच सौ गायों को पिलवाया। फिर उनका दूध ढाई सौ गायों को इस तरह (एक का दूध दूसरे को पिलाते) 16 गायों को दूध आठ गायों को पिलवाया। इस प्रकार आठ गायों के दूध से वैशाख पूर्णिमा (538 ई0पू0) के दिन खीर बनाकर सेनानी ग्राम के बट वृक्ष की पूजा करने हेतु अपनी दासी पुत्री पूर्णा को बरगद वृक्ष के पास साफ–सफाई करने के लिए भेजी। दासी पुत्री जब बरगद वृक्ष के पास साफ–सफाई करने आई तब वह बोधिसत्व सिद्धार्थ को वृक्ष की छाँव में पूरब दिशा की ओर मुख करके बैठे देखा।

उस दिन के पूर्व रात्रि में बोधिसत्व सिद्धार्थ भी पांच महास्वप्न देखा[5]– "आज मैं निःसंशय सम्यक सम्बुद्ध बनूँगा, निश्चय कर उस दिन सुबह सेनानी ग्राम के बरगद वृक्ष के पास बैठे महात्मा के शरीर से आभा (प्रकाश) निकलने के कारण सारा वृक्ष प्रकाशित हो रहा है। यह देखकर उसने सोचा– "आज हमारे देवता वृक्ष से उतरकर अपने ही हाथ से वलि ग्रहण कर बैठे हैं। इसलिए वह जल्दी–जल्दी वापस लौटकर अपनी मालिकिन से यह समाचार कह सुनायी।

सुजाता पूर्णा की बात को सुनकर प्रसन्न होकर

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

बोली– "आज से तू मेरी बेड़ी बेटी बनकर रह" कह पूर्णा को नए वस्त्र एवं गहने पहनने के लिए दी। तदुपरान्त एक लाख के मूल्य का सुवर्ण थाल में खीर लेकर दूसरे सुवर्ण थाल से ढक कर, कपड़े से बाँध, थाल को अपने सिर पर रख बरगद वृक्ष के पास आयी। वह भी बरगद वृक्ष के बोधिसत्व कुमार को बैठे हुए देखी। फलतः वह सोने की झारी से सुगन्धित जल से बोधिसत्व को हाथ धुलवा खीर से भरा थाल को उन्हें अर्पित कर दी। साथ ही यह भी याचना की जिस प्रकार आज से बीस वर्ष पूर्व मेरी मनोकामना पूर्ण हुई थी, उसी प्रकार आज आपकी मनोकामना भी पूर्ण हो" कहकर वापस लौट गयी।

बोधिसत्व सिद्धार्थ उस बरगद वृक्ष की प्रदक्षिणा कर, थाल को ले निरंजना नदी के तट पर आए। स्वर्ण में भरे खीर को नदी किनारे रखकर स्नान कर खीर खाने बैठ गए। स्वर्ण थाल में रखे खीर को 49 कौर में खा गए तथा उस स्वर्ण थाल को निरंजना नदी में प्रवाहित कर यह कहा – "यदि मैं बुद्ध हो सकूँ, तो यह थाल पानी के श्रोत के विपरित जाय।" यह कहकर बोधिसत्व नदी के किनारे हीं दिन भर का समय व्यतीत कर शाम को निरंजना नदी के पश्चिम तट पर उरूवेला के पीपल वृक्ष के पास आए और सोथिय नामक घसियारे से मिले आठ मुठी घास को लेकर पीपल वृक्ष की जड़ के पास बिछाकर बैठ गए। बैठने के पश्चात् यह दृढ़ निश्चय किया कि "चाहे मेरी चमड़ी, नसें, हड्डी ही क्यों बाकी रह जाय, शरीर की मांस सुख जाए तो यर्थाथ ज्ञान को प्राप्त किए बिना इस आसन को नहीं छोड़ूँगा और सौ बिजलियों के गिरने से भी न टूटने वाला अपराजित आसन लगाकर बैठ गए।

उस समय मसा–देवपुत्र ने सोचा – बोधिसत्व सिद्धार्थ मेरे अधिकार क्षेत्र से बाहर निकलना चाहता है, इसे जाने नहीं दूँगा। अपनी सेना के साथ मार ने उनके (बोधिसत्व के) ध्यान को तोड़ने के हजारों प्रयास किए, लेकिन बोधिसत्व अपने अपराजित आसन पर डटे रहे। सूर्यास्त के पूर्व मार सेना को बोधिसत्व सिद्धार्थ ने पराजित कर दिया। उस रात्रि के प्रथम याम (प्रहर) में उन्हें पूर्व जन्मों का ज्ञान हुआ, दूसरे याम में दिव्य चक्षु खुले और अन्तिम याम में उन्होंने प्रतीत्य– समुत्पाद को अनुलोम–विलोम से साक्षात कर सुबह होते–होते उन्हें सम्यक सम्बोधि की प्राप्ति हो गई।

बोधिसत्व सिद्धार्थ को सम्यक सम्बोधि प्राप्त कराने का श्रेय सुजाता के खीर ग्रहण करने को दिया जाता है। सम्यक सम्बोधि प्राप्ति के पश्चात् बुद्ध ने यह उदान प्रीति वाक्य कहा– "दुःखदायी जन्म बार–बार लेना पड़ा, मैं संसार में (शरीर रूपी गृह बनाने वाले) गृह कारक को पाने की खोज में निष्फल भटकता रहा। लेकिन गृह–कारक! अब मैंने तुझे देख लिया। अब तू फिर गृह निर्माण न कर सकेगा। तेरी सब कड़ियाँ टूट गई, गृह शिखर–विखर गया। चित्त निर्वाण प्राप्त कर लिया, तृष्णा का क्षय देख लिया।" सम्यक सम्बोधि की प्राप्ति के उपलक्ष्य में उरूवेला के उस पीपल वृक्ष (बोधि वृक्ष) के आस–पास सात सप्ताहों तक आनन्द लेते रहे। सात सप्ताहों के बीतने पर 49वें दिन सम्यक सम्बुद्ध ने दातून कर राजायतन वृक्ष के नीचे बैठ गए।

इसी समय वाहलीक का दो व्यापारी तपुस और भल्लिक उत्कल (उड़ीसा) से चलकर पश्चिम दिशा की ओर जा रहे थे। रास्ते में वे दोनों व्यापारी पांच सौ गाड़ियों को निरंजना नदी के तट पर खड़ा कर जलपान करने के लिए रूके। तपुस और भल्लिक राजायतन वृक्ष के पास सम्यक सम्बुद्ध को बैठे देखा। उन दोनों ने सत्तू और पूए (मधुपिण्ड) ले सम्यक सम्बुद्ध को अर्पित किया।

सेनानी ग्राम के बरगद वृक्ष के निकट हीं सुजाता द्वारा खीर अर्पित किए जाने के पूर्व बोधिसत्व सिद्धार्थ का भीक्षा पात्र अर्न्तधान हो गया था। लेकिन इस दिन उन्हें नील मणि से बनी भीक्षा–पात्र देवताओं की कृपा से उपलब्ध मिली। इसी भीक्षा–पात्र में उन दोनों व्यापारियों द्वारा प्रदत्त सत्तू और पूए को ग्रहण किया। तदुपरान्त उन दोनों व्यापारियों को बुद्ध तथा धर्म की शरण में जाने से दो वचन से प्रथम बार उपासक बअने। सम्यक सम्बुद्ध उन दोनों को अपने माथे से कुछ उखाड़ कर दिए जिसपर उन दोनों ने अपने नगर वाहलीक में जाकर स्तूप का निर्माण करवाया था।[6]

सम्यक सम्बुद्ध अजपाल न्योग्रोध वृक्ष के पास अपने दिव्य दृष्टि से उन पंचवर्गीय भिक्षुओं को देखा कि वे लोग सारनाथ के ऋषिपतन मृगदाय में विहार कर रहे हैं। वे वहाँ से उठकर उरूवेला से सारनाथ के ऋषिपतन मृगदाय की ओर प्रस्थान कर गए। उस समय उरूवेला से सारनाथ की दूरी 18 योजन थी।[7] वैशाख पूर्णियाँ को बोधिसत्व सिद्धार्थ को सम्यक सम्बोधि प्राप्त हुई। 49 दिनों तक बोधिवृक्ष के आस–पास व्यतीत किए। उरूवेला से सारनाथ पहुँचने में लगभग 11 दिन लग गया। आषाढ़ पूर्णियाँ के दिन सारनाथ के ऋषि पतन मृगदाय में पहुँचकर पंचवर्गीय भिक्षुओं (1. अज्ञात कौण्डिन्य, 2. वप्प, 3. भद्दिय, 4. अश्वजीत और 5. महानाम) को प्रव्रजित कर धर्मचक्र प्रर्वतन[8] किया।

दूसरे दिन भोर में सुजाता का पुत्र यथ घर से भाग कर बड़बड़ाता हुआ ऋषिपतन मृगदाय की ओर आ रहा था, जिसे देखकर सम्यक सम्बुद्ध अपने पास बुलाया और धर्मोपदेश देकर उसके चित्त को शान्त किया। इधर सुजाता अपने पुत्र को घर में न देखकर अपने पति और

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

लोगों को उसे खोजने के लिए भेजी। सुजाता का पति और ऋषिपतन मृगदाय में भगवान बुद्ध को बैठे देखकर उनकी तरफ बढ़ा। भगवान बुद्ध भी यश का पिता समझ उसकी नजर को अपने लोकोत्तर शक्ति से धूंधला कर दिया। फलतः सुजाता का पति अपने पुत्र यश को भगवान बुद्ध के पास बैठा नहीं देख पाया। भगवान से अपने पुत्र के बारे में पूछा। भगवान ने उन्हें; उनके पुत्र की व्यग्रता के बारे में कहा, वह अपने पुत्र की व्यग्रता को स्वीकार किया। फलस्वरूप भगवान बृद्ध यश के पिता की भंग दृष्टि खोल दिया। वह अपने पुत्र को भगवान बुद्ध के पास प्रव्रजित भिक्षु के रूप में देखा। फलतः यश का पिता अपने प्रव्रजित पुत्र और पंचवर्गीय भिक्षुओं के साथ भगवान बुद्ध को अपने घर पर भोजन करने का आमंत्रण दिया। यह उल्लेखनीय है कि यश प्रव्रजित होने के दूसरे दिन हीं अर्हत पद प्राप्त कर लिए थे।

भगवान बुद्ध उस दिन पंचवर्गीय भिक्षुओं और यश के साथ सुजाता के घर भोजन करने गए। सुजाता और यथ की पत्नी उनलोगों को अपने हाथों से भोजन कराया। भोजन समाप्ति के बाद भगवान बुद्ध उनलोगों को उपदेश दिया। उपदेश सुनकर सुजाता अपने को त्रिरत्न (बुद्ध, धर्म और संघ) का उपासिका होने का वचन दी। फलतः भगवान बुद्ध बुद्धसंघ का श्रेष्ठ और प्रथम उपासिका सुजाता[9] को घोषित किए।

बकरौर गाँव के उत्तर एक विशाल टिल्हा[10] था, जिसकी खुदाई 1789 ई0 में की गई थी। खुदाई में इस स्थान पर एक विशाल स्तूप मिला था, जिसे सुजाता गढ़ कहा गया है। साथ ही इसका दूसरा नाम कटनी भी है। यह स्तूप 150 मीटर गोलाई में तथा 50 फीट ऊँचा है। इस स्तुप को पुरातत्व विभाग अपने अधीन लेकर कटीला तार से घेर दिया गया है। यह स्तूप ईंट से बना हुआ है। ईंट की लम्बाई 15.5 इंच, चौड़ाई 10.5 इंच तथा मोटाई 3.5 इंच है। इस स्तूप के पास ही उत्तर दिशा में बालू–पत्थर का एक स्तम्भ भी है। इस स्तम्भ की ऊँचाई 16 फीट एवं गोलाई 2 फीट पौने पांच इंच है।

सातवीं शताब्दी के चीनी पर्यटक ह्वेन–सांग11 इस सेनानी ग्राम (आधुनिक बकरौर) का भ्रमण किया था। अपने यात्रा विवरणी में सेनानी ग्राम में बोधिसत्व एक हाथिनी के पुत्र रूप में जन्म लिए थे। फलतः इस स्थान को गन्ध हस्ति भी कहा गया था। इस हथिनी को एक स्थानीय राजा कैद कर लिया था। परम्परा के अनुसार इसी गन्ध हस्ति के पास स्तूप और स्तम्भ का निर्माण करवाया गया था। इसी स्तूप के पास एक पवित्र तालाब भी था, जिसे मार्तंक पोखर भी कहा जाता था। यह पोखर लगभग 800 फीट गोलाकार है। यहाँ पर उस समय वार्षिक मेला का आयोजन होता था। आधुनिक बकरौर का प्राचीन नाम अजयपुर था।

वर्तमान काल में सुजाता मन्दिर बौद्धों का दर्शनीय स्थल है। इस मन्दिर में भगवान बुद्ध की अस्थि पंजर चेहरा में बैठे हुए दिखाए गए हैं, जिसके दाएँ सुजाता एवं बाएँ सुजाता की दासी पूर्णा हाथ जोड़े भगवान बुद्ध की वन्दना कर रही है। बकरौर में अन्य कई दर्शनीय स्थल है, जिन्हें हिन्दू परम्परा वाले लोग अपने धर्म के अन्तर्गत अपना लिए हैं, जब कि वास्तव में वह बौद्ध स्थल है। वास्तव में बुद्धकालीन सेनानी ग्राम ही आधुनिक बकरौर है, जहाँ सुजाता ने सिद्धार्थ गौतम को खीर दान की थी, तत्पश्चात् सिद्धार्थ गौतम को बोधिसत्व की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध कहलाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सारत्थ पकासिनी, जिल्द – 1, पृष्ठ– 135, प्रकाशक नवनालन्दा महाविहार नालन्दा।
2. मज्झिक निकाय, भाग–1, पृष्ठ– 236, सम्पा0 स्वा0 द्वारिका दास शास्त्री, वाराणसी।
3. बुद्धि विजय काव्य, पृष्ठ– 262, सम्पा0 एवं लेखक– प्रो0 शान्ति भिक्षु शास्त्री , केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमरारू, लेह, लद्दाक, 1988।
4. जातक, भाग– प्रथम पृष्ठ– 85, सम्पा0, भदन्त आनन्द कौशल्यायण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग – 12, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद, 1985।
5. महामानव बुद्ध की महान विद्या, विपस्सना का उद्‌गम और विकास, पृष्ठ– 32, लेखक– आचार्य सत्यनारायण गोयन्का, द्वितीय संस्मरण, 2011, वि0वि0 इगतपुरी (महाराष्ट्र)।
6. हिस्ट्री ऑफ बुद्धिज्म इन इंडिया, पृष्ठ– 208, लेखक– प्रो0 सी0 एस0 उपासक, प्रकाशक– सेन्ट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ हायर टिवस, सारनाथ, वाराणसी, 1999।
7. बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, पृष्ठ– 214, लेखक– भरत सिंह उपाध्याय।
8. समुत्त निकाय भा–4, धर्मचक्र प्रवर्तन सूत्र, पृष्ठ– 2156, सम्पादक, स्वामी द्वारिका दास शास्त्री, वाराणसी।
9. अंगुत्तर निकाय, भाग–1, पृष्ठ 40, सम्पादक, स्वामी द्वारिका दास शास्त्री, वाराणसी, 2009।
10. अर्कियोलॉजिकल रिपोर्ट– 1861, पृष्ठ– 62–63।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*